शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

साहित्यिक शोध : अर्थ-स्वरूप एवं पद्धतियाँ

विनिता गुप्ता (शोधार्थी हिन्दी)
हमीदिया महाविद्यालय, भोपाल, भारत

शोध संक्षेप

मानव के मन में सदैव से नई नई जिज्ञासायें उत्पन्न होती आई हैं । तर्कशील और विवेकसंगत होने के कारण मानव का स्वभाव नये-नये प्रयोगों द्वारा नये-नये तथ्यों को खोजने का रहा है । इन अन्वेषणों का मुख्य कारण मानव के जीवन को अधिक सुखद, सुंदर, सांस्कृतिक, उदात्त, विराट बनाना रहा है। अन्वेषण की जन्मजात प्रवृत्ति के कारण ही आदिम युग से वर्तमान युग तक की यात्रा पूर्ण हो पायी है। मनुष्य निरंतर विकास के सोपान पार कर यहाँ तक आ पहुंचा है। उसकी विकास यात्रा में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी की चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

मनुष्य के द्वारा किये जाने वाले अन्वेषणों को हम मुख्यत: दो भागों में विभाजित कर सकते हैं - 1. भौतिक अन्वेषण, 2. भौतिकेत्तर अन्वेषण । भौतिक अन्वेषण की श्रेणी में वे सभी अन्वेषण शामिल किये जा सकते हैं जिनमें भौतिक साधनों को केन्द्रित कर अन्वेषण प्रक्रिया पूरी की जाये । इस प्रकार के शोध में धर्म, दर्शन, अलौकिकता का अभाव होता है । ये समाज की मूल पृष्टभूमि पर किये जाते हैं, उदाहरणतः सामाजिक अन्वेषण जिनमें समाज के किसी वर्ग को केन्द्रित कर उसके विभिन्न पक्षों पर शोध या अन्वेषण किया जाता है । भौतिकेत्तर अन्वेषण में वे अन्वेषण शामिल किये जा सकते हैं, जिनका कोई भौतिक रूप तो नहीं होता पर वह समाज में उपस्थित हैं । ये मुख्यतः सांस्कृतिक अन्वेषण होते हैं । जिनमें मनुष्य के जीवन का धार्मिक, सांस्कृतिक पक्ष एवं दर्शन समाहित होता है । धर्म या संस्कृति का कोई भौतिक रूप समाज में दिखायी नहीं देता पर फिर भी वह समाज में है । समाज के मूल का कारण सांस्कृतिक और धार्मिक पक्ष रहता है । मनुष्य किसी न किसी रूप में धर्म और दर्शन से जुड़ता है एक निश्चित संस्कृति के मार्ग पर अग्रसर होता है और यही धर्म, दर्शन और संस्कृति के कारण उसके मन में जब अनेक जिज्ञासाओं का जन्म होता है और उनके निवारण हेतु वह अन्वेषण के पथ पर चलता है तो वह अन्वेषण भौतिकेत्तर अन्वेषण की श्रेणी में आ जाता है । अन्वेषण के विभिन्न रूप और प्रकार ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में दर्शित होते हैं, आधुनिक शब्दावली में इन अन्वेषणों को "शोध" की संज्ञा से अभिहित किया गया है । किसी भी समाज और संस्कृति में जन्में मनुष्य और समाज के विकास के लिये ज्ञान-विज्ञान, संस्कृति और साहित्य के विकास के लिये शोध मूलभूत आवश्यकता है अपितु अनिवार्यता है। कोई भी शोध संस्कृति के शाश्वत प्रतिमानों की पुष्टि करता हुआ उसे नवीन व्याख्या प्रदान करता है । साहित्य के मूल्यों, तथ्यों की खोज कर समाज और साहित्य को दृढ़ता प्रदान करता है । नवीन व्याख्याओं और प्रतिमानों के प्रतिपादन के कारण

समाज में आये बदलाव और विवादों के समाधान शोध के माध्यम से प्रस्तुत किये जाते हैं । इस क्षेत्र में साहित्यिक शोध की अहम भूमिका रहती है, क्योंकि साहित्य जीवन और संस्कृति के प्रति सबसे पहले उत्तरदायी होता है । इसका प्रमुख कारण यह है कि साहित्य ही ज्ञान-विज्ञान के सभी क्षेत्रों को समाहित करता है । अतः किसी भी भाषा तथा उसके साहित्य को केन्द्रित कर किया गया शोध, उस भाषा साहित्य के जन्म, पौराणिकता, इतिहास, समसामयिकता तथा भावी संभावनाओं के महत्व पर प्रकाश डालता है ।

शोध का अर्थ, स्वरुप एवं महत्व

शोध के अर्थ एवं स्वरूप को समझने के लिए हमें शोध के पर्यायवाची रूप में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की समीक्षा करनी होगी । **अन्वेषण** - ऊपरी तौर पर "अन्वेषण" शब्द से "शोध" के पर्यायवाची होने का आभास होता है । लेकिन साहित्यिक शोध के क्षेत्र में अन्वेषण और शोध में पर्याप्त अंतर मिलता है । अन्वेषण से तात्पर्य है, ढूंढना या खोजना जबकि किसी अभिष्ट विषय के सम्बंध में तात्विक दृष्टि से तथ्यों के आधार पर उसकी पुनर्विवेचना शोध कहलाती है । इस प्रकार अन्वेषण और शोध में बड़ा विभेद मिलता है । **गवेषणा** - शोध का दूसरे पर्याय के रूप में गवेषणा का प्रयोग किया जाता है । गवेषणा शब्द का तात्पर्य गायों के अन्वेषण से है । गायों को ढूंढने की इच्छा गवेषणा कहलाती है । कालांतर में अर्थपरिवर्तन के कारण गवेषणा शब्द के "गो" अंश का अर्थ लुप्त हो गया और यह अन्वेषण के रूप में शेष रह गया । अत: साहित्यिक दिशा दृष्टि में यह मात्र शोध का पर्यायवाची है, मूलतः शोध का स्वरूप नहीं। **समीक्षा** - शोध के अन्य स्वरूप में समीक्षा शब्द का प्रयोग किया जाता है, वस्तुत: समीक्षा शब्द का प्रयोग समालोचना या आलोचना के पर्यायवाची रूप में किया जाता है । समीक्षा शोध का एक अंग या तत्व कही जा सकती है। शोध कार्य को सम्पन्न करने वाले तत्वों में समीक्षा शोध के एक प्रकार के रूप में अपनी भूमिका निभाती है और इसके आधार पर किये गये शोध को समीक्षात्मक शोध की श्रेणी में रखा जा सकता है । इसके अलावा शोध के अन्य प्रकार भी देखने को मिलते हैं । **खोज** - खोज की व्युत्पत्ति "खोज्ज" शब्द से हुई है जिसका अर्थ है- पदचिह्न । "निशान", "तलाश", "गवेषणा", "अनुसंधान" आदि के समानार्थी रूप में "खोज" शब्द का प्रयोग किया जाता है । लेकिन यह शोध का मूल अर्थ प्रकट नहीं करता । खोज का तात्पर्य किसी वस्तु की खोज से है । पुराने समय में पशुओं को उनके पैरों के निशान से खोजा जाता था इस तरह खोज गवेषणा के समान अर्थ को प्रकट करता है । जबकि साहित्य में खोज का तात्पर्य किसी नये तथ्य की खोज से होता है । शोध संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग कई तरह से किया जाता है, जैसे हम कहते हैं, कि आपने अपने शोध-प्रबंध में कौन सी नई खोज की है ? यह अनुसंधान का बोध कराता है पर उसका पर्यायवाची नहीं । **अनुसंधान** - शोध के कई पर्यायवाची देखने को मिलते हैं, उन सभी का मूल अर्थ है- खोज या अन्वेषण । अनुसंधान का इस दृष्टि से एक अलग ही रूप है । साहित्यिक क्षेत्र में अनुसंधान शब्द का अपना ही अर्थ और महत्व है । अनुसंधान का शाब्दिक अर्थ है किसी विषय, वस्तु, विचार आदि का संधान करना । संधान का अर्थ है लक्ष्य निर्धारित करना या निशाना लगाना। साहित्य में अनुसंधान के दो प्रकार देखने को मिलते हैं - 1. तथ्यपरक, 2. तत्त्वपरक ।

अनुसंधान के इन दोनों प्रकारों में विषय, विषय प्रतिपादन, विषय समालोचना आदि की दृष्टि से पर्याप्त अंतर है । तथ्यों के आधार पर विषय वस्तु की विवेचना तथ्यपरक अनुसंधान की श्रेणी में आती है, जबकि विषय के विभिन्न तत्वों को आधार बनाकर उस पर शोध करके किसी विषय विशेष का प्रतिपादन करना तत्वपरक अनुसंधान कहलाता है । इस प्रकार अनुसंधान शोध का महत्वपूर्ण प्रकार या स्वरूप है । लेकिन शोध केवल तथ्यों संगतिकरण से पूर्ण नहीं होता ।

डॉ.उदयभानुसिंह के अनुसार "अनुसंधान" शब्द "रिसर्च" के निकटतम अर्थ को निरूपित करता है । शोध की पूर्णता को नहीं । वे कहते है - ""रिसर्च के पर्यायवाची "अनुसंधान" का परिनिष्ठित अर्थ है-किसी महत्वपूर्ण सुनिश्चित विषय का तत्वाभिनिवेषी वैज्ञानिक अध्ययन; तत्संबंधी तथ्यों का व्यवस्थित ढंग से अन्वेषण, निरीक्षण-परीक्षण तथा वर्गीकरण-विश्लेषण और उनके आधार पर प्रस्थापनयोग्य निष्कर्षों का प्रमाणनिर्देशपूर्वक तर्कसंगत उपस्थापन ।"1 इस तरह डॉ. सिंह ने शोध पद्धति के सभी अंगो-उपअंगो को अनुसंधान में पूर्णतः समाहित कर दिया है ।

शोध - अब तक हम "शोध" के पर्यायवाची रूपों की विवेचना कर रहे थे । जिससे यह ज्ञात होता है कि शोध के सभी पर्यायवाची शब्दों से शोध के अर्थ, प्रक्रिया, गति, उपलब्धि और उद्देश्य की अनुभूति होती है पर "शोध" की पूर्णत: व्यंजना नहीं करते । शोध कार्य में लिखे गये प्रबंध को शोध-प्रबंध की संज्ञा देना ही उचित लगता है । प्रबंध के साथ शोध शब्द का प्रयोग यह उसके पूर्ण अर्थ और कार्य की अभिव्यंजना करता है । शोध शब्द का अर्थ है-संस्कार या शुद्धि अथवा शोधन प्रक्रिया । किसी विषय का उसके विभिन्न पक्षों को तथ्यों, तत्वों, आधारों, तर्कशीलता आदि कसौटियों पर परखा जाना या उसका शोधन करना शोध कहलता है । "मनुस्मृति में इस शब्द का प्रयोग स्पष्ट करने अथवा संदेह दूर करने के अर्थ में हुआ है-" मिट्टी से (पात्र आदि) शुद्ध होते हैं, नदी वेगवती रहकर ही शुद्ध होती है । स्नानादि से शरीर शुद्ध होता है और मन सत्य से शुद्ध होता है ।2

आयुर्वेद में पदार्थों, द्रव्यों और धातुओं की शुद्धि के लिए 'शोधन' शब्द का प्रयोग किया गया है । अध्ययन क्षेत्र में समाज अथवा जीवन संबंधी सत्य की खोज और इस खोज में व्यवहारिक एवं वैज्ञानिक कार्यविधि के तौर पर 'शोध' शब्द का प्रयोग किया जाता है ।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है प्राचीन काल से आज तक शोध के कई स्वरूप और प्रकार रहे हैं जिनके आधार पर नवीन तथ्यों की खोज और उनका निरूपण किया जाता रहा है । इन तथ्यों की खोज और निरूपण के लिये एवं किसी शोध को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिये शोध की विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है । शोधार्थी अपने विषय की अनुरूपता, स्थान और समय अनुसार शोध की किसी अभिष्ट पद्धति का चयन करता है । कुछ शोध पद्धतियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है - **सर्वेक्षण पद्धति** - इस पद्धति के द्वारा, साहित्य के किसी कालखण्ड, अंग, विधा, आंदोलन अथवा प्रवृत्ति का विवरण क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है । इस शोध पद्धति से विषय अध्ययन को सूक्ष्म एवं गहन दृष्टि मिलती है । सर्वेक्षण के कार्यों को सम्पन्न करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि सर्वेक्षण पश्चात जो भी परिणाम

प्रतिपादित किये जाये वे मात्र सैद्धांतिक रूप में न हो अपितु वे तथ्यों का संग्रह हो। तथ्यों के आधार पर विषय विवेचना सर्वेक्षण पद्धति का कार्य है । **आलोचनात्मक पद्धति** - आलोचनात्मक पद्धति सर्वेक्षण पद्धति की तुलना में अधिक गंभीर और दार्शनिक है । शोधार्थी द्वारा विषय की वस्तुष्ठिता के साथ बंधकर विषय के विभिन्न पक्षों को आलोचनात्मक रूप में प्रतिपादित करना इस पद्धति का भाग है । यहाँ शोधार्थी को इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि आलोचना करते समय उसकी अपनी निजी भावनाओं, राग-द्वेष या विचारोंका समावेश न हो । **समाजशास्त्रीय पद्धति** - सामाजिक तत्वों के आधार पर साहित्य में समाहित सामाजिक परिवेश, रूढियां, परम्पराओं, मानवीय जीवन, नैतिक-दार्शनिक तत्वों को का अध्ययन इस पद्धति की कार्यविधि है । **ऐतिहासिक पद्धति** - ऐतिहासिक विषयों, प्राचीन ग्रंथों के आधार पर पुनर्विवेचन, खोज या अनुसंधान ऐतिहासिक पद्धति का हिस्सा है। विषय को उसकी ऐतिहासिक महत्ता के आधार पर निरूपित करते हुये विवेचित करना शोध की ऐतिहासिक पद्धति कहलायेगी । **समस्यामूलक पद्धति** - इस प्रकार के शोध में शोधार्थी ऐसे विषय का चयन करता है जिसमें समस्या विशेष पर बल दिया जाये और उसके निवारण के लिये उपयुक्त दिशायें और उपाये भी दियें जाये। इसमें साहित्य के किसी अंग विशेष के अध्ययन के साथ समाज और साहित्य में दिखने वाली मौलिक समस्या से बंधकर शोध कार्य किया जाता है । इस प्रकार इस शोध में शोधार्थी की दृष्टि का लक्ष्य साहित्य के अंग-उपअंगों का अध्ययन न होकर समस्या विशेष का अध्ययन होता है । **तुलनात्मक पद्धति** - इस प्रकार के शोध में दो विरोधी या समान विषयों की तुलना करते हुए शोध कार्य किया जाता है । जैसे प्रसाद-प्रेमचंद के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन । जायसी या घनानंद के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन ।

स्पष्टतः कहा जा सकता है कि शोध प्रबंध के मानक रूप को प्रस्तुत करने के कई प्रकार और पद्धतियाँ देखने को मिलती हैं, जो किसी शोध प्रबंध को मानक, श्रेष्ठ और पूर्ण बनाती हैं ।

संदर्भ

1 अनुसंधान का विवेचन पृष्ठ 13, द्वितीयक संदर्भ – शोध: अर्थ एवं स्वरूप, बैजनाथ सिंहल, पृष्ठ 21, वाणी प्रकाशन, संस्करण 1994

2 शोध: अर्थ एवं स्वरूप, बैजनाथ सिंहल, पृष्ठ 21, वाणी प्रकाशन, संस्करण 1994

3 शोध-स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, बैजनाथ सिंहल, वाणी प्रकाशन, संस्करण 1994

4. शोध प्रविधि, डॉ. विनयमोहन शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1963